राज्य अध्याय 42

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हांथों में सौंपे।

2	**साझा करें** (20 मिनट) ***[शांत समय]*** **यिर्मयाह 32,33,36 और 37**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यिर्मयाह 32,33,36 और 37) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट) ***[परमेश्वर के संसाधन]*** **श्रृंखला ठ का पुनरावलोकन करें**

दो-दो करके **श्रंखला ठ का *पनरावलोकन करें।* "परमेश्वर के संसाधन"**

(1) इब्रानियों 13:5ब-6. परमेश्वर ने कहा: "मैं तुझे कभी न छोड़ूँगा, और न कभी तुझे त्यागूँगा।" इसलिये हम निडर होकर कहते हैः "प्रभु मेरा सहायक है, मैं न डरूँगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?"

(2) भजन 119:105. "तेरा वचन मेरे पाँव के लिये दीपक और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।"

(3) परमेश्वर की सामर्थ्य। यशायाह 41:10. "मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ; मैं तुझे दृढ करूँगा और तेरी सहायता करूँगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे संभाले रहूँगा।"

(4) परमेश्वर की बुद्धि। याकूब 1:5. "पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो तो परमेश्वर से माँगे, जो बिना उलहाना दिए सब को उदारता से देता है, और उसको दी।"

(5) परमेश्वर की चंगाई। 2इतिहास 7:14. "तब यदि मेरी प्रजा के लोग जो मेरे कहलाते हैं, दीन होकर प्रार्थना करें और मेरे दर्शन के खोजी होकर अपनी बुरी जान से फिरें, तो मैं स्वर्ग मे से सुनकर उनका पाप क्षमा करूँगा और उनके देश को ज्यों का त्यों कर दूँग।"

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***[रोमियों की पत्री]*** **रोमियों 13:1-14**

परिचय। **रोमियों 13:1-14** का एक साथ अध्ययन करने के लिये बाइबल के पाँच चरणों की विधि का प्रयोग करें।

रोमियों अध्याय 12 से 16 *व्यावहारिक पवित्रता या शुद्धिकरण* के विषय में बताते हैं और इनके *उपयोग* पर जोर देते हैं। रोमियों 12 ने अपने शरीर और मन के संबंध में और सभी प्रकार के रिश्तों के संबंध में मसीही के कर्तव्य को सिखाया। रोमियों 13

अधिकार के संस्थानों, विशेष रूप से सरकार, अपने पड़ोसी से संबंध और अंधेरे और प्रकाश के क्षेत्रों के प्रति संबंध के विषय में मसीही के कर्तव्य को सिखाता है।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 13:1-14 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छूआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आइये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

13:1-7

खोज 1. **अधिकार के विभिन्न संस्थानों के संबंध में मसीही की जिम्मेदारी।**

(1) अधिकार और अधीनता के संबंध में परमेश्वर की सात संस्थाएँ।

परमेश्वर ने पृथ्वी पर सात अधिकार-अधीनता संबंध स्थापित किए हैं (रोमियों 13:1-2):

मसीह में परमेश्वर के पास सभी लोगों और सब चीज़ों पर अधिकार है (1 कुरिन्थियों 11:3; इफिसियों 1:20-23; कुलुस्सियों 1:18)।

मनुष्य का परमेश्वर की सृष्टि पर अधिकार है: भूमि, पेड़, पौधे और जानवर (उत्पत्ति 1:28; 2:15-16; भजन संहिता 8:4-8)।

पुरुष के पास विवाह संबंध में महिला पर अधिकार है (उत्पत्ति 3:16; इफिसियों 5:22-24; कुलुस्सियों 3:18; 1 पतरस 3:1-6) और कलीसिया की आधिकारिक सभाओं में अधिकार है (1 कुरिन्थियों 11:3) ; 14:33-35; 1 तीमुथियुस 2:11-14; 3:2-5)।

माता-पिता का अपने बच्चों पर अधिकार है जो अभी भी कम आयु के हैं (इफिसियों 6:1-3; कुलुस्सियों 3:20)।

किसी देश की **सरकार** का अपने नागरिकों पर अधिकार है (रोमियों 13:3-7; 1पतरस 2:13-17);

नियोक्ता के पास अपने कर्मचारियों पर अधिकार है (इफिसियों 6:5-9; कुलुस्सियों 3:22-4:1; 1 पतरस 2:18-23)।

एक कलीसिया के **अगुवों** का अपनी कलीसिया के सदस्यों पर अधिकार होता है (प्रेरितों 20:28; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12; इब्रानियों 13:17)।

परमेश्वर ने इन सभी सात अधिकार-अधीनता संबंधों को स्थापित किया है। कोई भी व्यक्ति अधिकार की इन सात संस्थाओं को न बदले या इनका विरोध न करे। पहले को छोड़कर सभी अधिकार-अधीनता संबंधों में विशिष्ट, परन्तु सीमित कर्तव्य और

सीमित अधिकार भी हैं।

(2) नागरिक अधिकारी।

बाइबल में निश्चित रूप से संसार की सरकारों के विषय में शिक्षाएँ हैं। पौलुस यहाँ नागरिक अधिकारों की बात कर रहा है, क्योंकि वह "तलवार रखने" और "करों और राजस्व का भुगतान करने" का उल्लेख करता है। यह शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि संसार में सभी मसीही किसी न किसी सरकारों के अधीन रहते हैं।

रोमियों को लिखे पत्र में यह भी महत्वपूर्ण था, क्योंकि रोम में मसीही कलीसिया में, सदस्यों का एक बड़ा भाग यहूदी मसीहियों का था। पौलुस के दिनों के कई यहूदी रोम की अधीनता के जुए को दूर करने के लिए एक अवसर की ख़ोज में थे। वे एक बार फिर राजनीतिक रूप से स्वतंत्र होने के लिए उत्सुक थे। वे अपने स्वयं का राजा और स्वयं के शासी अधिकारी चाहते थे (यूहन्ना 6:15; 8:33; प्रेरितों 1:5; 5:36-37)। पहले से ही पहली शताब्दी ई.स. के पहले आधे भाग में, रोम शहर में राजनीतिक गड़बड़ियाँ थीं। एक रोमी लेखक, सुटोनियस ने लिखा है कि सम्राट क्लौदियुस ने 49 ई.स.में, एक निश्चित "क्रेस्टस" से प्रेरित यहूदियों के निरंतर विद्रोह के कारण सभी यहूदियों को रोम शहर से निष्कासित कर दिया था (तुलना करें प्रेरितों के काम 18:2)। जब यह अध्यादेश ज़ोर में नहीं रहा, तो कई यहूदी रोम लौट गए। इसलिए प्रेरित पौलुस ने लिखा कि रोम में मसीहियों को अवश्य स्वयं को शासी अधिकारियों के अधीन करना चाहिए। मसीहियों को क्यों अवश्य शासी अधिकारियों के अधीन होना चाहिए का कारण है कि परमेश्वर ने स्वयं सभी शासी अधिकारियों की स्थापना की है (रोमियों 13:12)।

13:8-14

खोज 2. अपने पड़ोसी के संबंध में मसीही की जिम्मेदारी।

रोमियों 13:8-14 सिखाता है कि व्यावहारिक पवित्रता या शुद्धिकरण पूर्ण चिह्नित प्रेम के जीवन जीने और प्रकाश में जीवन जीने से बढ़कर है। "प्रेम का जीवन जीने" का अर्थ प्रतिदिन स्वयं को परमेश्वर के प्रति सुगंधित भेंट और बलिदान के रूप में देना है (इफिसियों 5:1-2)। "प्रकाश में जीवन जीने" का अर्थ यह पता लगाना है कि प्रभु को क्या प्रसन्न करता है, अंधकार के फलहीन कर्मों को उजागर करना, एक पारदर्शी जीवन जीना और ऐसा फल देना जिसमें पूर्ण अच्छाई, धार्मिकता और सच्चाई सम्मिलित हो (इफिसियों 5:8-14)। क्योंकि मानव इतिहास का अंत और मसीहियों के पूर्ण उद्धार का समय तेजी से निकट आ रहा है, इसलिए शुद्धिकरण एक अति आवश्यक मामला है!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आइये रोमियों 13:1-14 में पायी जाने वाली सच्चाइयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

13:1-5

***प्रश्न 1.* शासी अधिकारियों के संबंध में मसीही का क्या कर्तव्य है?**

ध्यान दें।

(1) परमेश्वर द्वारा स्थापित अधिकारियों के प्रति समर्पण करना शुद्धिकरण का एक भाग है।

अधिकार (यूनानी: एकुशिया) के संस्थानों के प्रति "समर्पण" "परमेश्वर की अच्छी, स्वीकार्य और सिद्ध इच्छा" का एक भाग है जैसा कि रोमियों 12:2 सिखाता है।

नए नियम में हमने पढ़ा कि यहूदियों के पास रोमी सरकार के *अधिकारों* के विषय में प्रश्न थे (मत्ती 22:16-17; मरकुस 12:14; लूका 20:21-22। यहूदियों में अपनी स्वतंत्रता पर *गर्व* करने की प्रवृत्ति थी (यूहन्ना 8:33)। यहूदियों के बीच देशद्रोही गुट थे (प्रेरितों 5:36-37)। धर्मनिरपेक्ष इतिहास की पुस्तकों में रोमी जूए के तहत यहूदियों की बेचैनी के संबंध में प्रमाण हैं। रोमी सम्राट, क्लौदियुस, ने वास्तव में यहूदियों को सम्भवतः उनके विरोध या यहाँ तक कि उनके विद्रोह के कारण भी रोम से निष्कासित कर दिया था (प्रेरितों 18:2)।

रोमी अधिकारियों की सोच में, मसीही धर्म यहूदी धर्म से जुड़ा था और यहूदी धर्म के किसी भी देशद्रोही स्वभाव का आरोप वैसे ही मसीहियों पर भी लगाया जाना था। इसने ऐसी स्थिति पैदा की जिसमें मसीहियों के लिए सभी क्रांतिकारी आकांक्षाओं या कार्यों से बचने के साथ-साथ न्यायाध्यक्षों के प्रति उनके अधिकार के उचित उपयोग में अनधीनता करना आवश्यक था। शिक्षा भी मसीहियों के बीच "स्वतंत्रता" की किसी भी संभावित विकृत धारणा के विरुद्ध है, विशेष रूप से इस तथ्य को देखते हुए कि सभी मसीही मानते हैं कि सच्ची स्वतंत्रता राजाओं की अधीनता या प्रभु यीशु मसीह के शासन के बाध्य होने में है। इन राजनीतिक वास्तविकताओं को देखते हुए, पौलुस सिखाता है कि अधिकार के सभी सात संस्थानों के साथ एक मसीही का संबंध शुद्धिकरण का एक भाग है!

(2) अधिकार के संस्थानों के प्रति अधीनता बिना योग्यता के नहीं है।

एक ओर, नया नियम अधिकार की संस्थाओं के प्रति मसीहियों के कर्तव्यों को सिखाता है। 1 तीमुथियुस 2:1 सिखाता है कि मसीहियों को अधिकार में सभी लोगों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। तीतुस 3:1 सिखाता है कि मसीहियों को आज्ञाकारी होने के साथ-साथ शासक और अधिकारियों के प्रति शांतिपूर्वक और निंदा के बिना समर्पित होना चाहिए।

दूसरी ओर, नया नियम कहता है कि दुनिया में अधिकारियों ने अक्सर मसीहियों को सताया था क्योंकि उन्होंने सुसमाचार का प्रचार किया (और लोगों को पश्चाताप और परिवर्तन करने के लिए बोला) और गरीब, असहाय और उत्पीड़ितों की सहायता की। इसलिए बाइबल को उन अधिकारियों के प्रति अवज्ञा और उन अधिकारियों के प्रति आज्ञाकारिता के बीच एक स्पष्ट रेखा खींचनी थी जो अन्याय के साथ शासन करते हैं और जो न्याय साथ शासन करते हैं। यीशु मसीह ने दोनों मामलों में निष्ठा की माँग की है।

अधिकारियों के प्रति अवज्ञा प्रेरितों 4:19-20 और 5:29 में उल्लिखित है और अधिकारियों के प्रति आज्ञाकारिता रोमियों 13:1-7 में उल्लिखित है! एक सामान्य नियम के रूप में, सभी मसीहियों को उन सभी बातों में अधिकारियों का पालन करना चाहिए जो बाइबल की शिक्षाओं के विरुद्ध नहीं हैं। हालाँकि, जब अधिकारी अपने अधिकार से आगे निकल जाते हैं और माँग करते हैं कि मसीही ऐसे काम करें जो परमेश्वर द्वारा मना किए गए हैं, या मसीहियों को उन चीजों को करने के लिए मना

करते हैं, जिनकी आज्ञा परमेश्वर ने दी है, तो मसीहियों को सम्मान से अधिकारियों की बात मानने से इनकार कर देना चाहिए। जब भी अधिकार के पद पर लोगों की माँगों और परमेश्वर की आज्ञाओं के बीच संघर्ष होता है, तो प्रेरितों 5:29 में प्रेरित पतरस के शब्द को प्रभावी होना चाहिए, "हमें मनुष्य के बजाय परमेश्वर का पालन करना चाहिए।"

13:6-7

***प्रश्न 2*. करों और राजस्व के संबंध में मसीही का क्या कर्तव्य है?**

ध्यान दें।

(1) मसीहियों को ज़रूर सरकार को कर देना चाहिए।

क्योंकि एक सरकार अपना पूरा समय अपने कार्य को देती है, इसलिए उसकी आर्थिक रूप से सहायता करने की आवश्यकता है। साथ ही सरकार में लोगों को अवश्य खाना और जीना चाहिए। सरकार बच्चों और वयस्कों की शिक्षा का विकास करके, पुलिस और व्यवस्थायी अदालतों के माध्यम से न्याय व्यवस्था बनाए रखने के द्वारा, और सड़कों और पार्कों, आदि के साथ नगरों और शहरों को विकसित करने के द्वारा समाज में लोगों का भला करती है। सरकार को अपराध और भ्रष्टाचार से लड़ना चाहिए, समाज में बुराई करने वालों को दंडित करना चाहिए और समाज में व्यवस्था व्यवस्था बनाए रखनी चाहिए है। यह सब अच्छा करने के लिए सरकार को धन की आवश्यकता है। यही कारण है कि परमेश्वर मसीहियों सहित सभी लोगों को सरकार को अपने करों और राजस्व का भुगतान करने की आज्ञा देता है।

करों को व्यक्तियों या अर्जित या प्राप्त संपत्ति पर लगाया जाता है (लूका 20:22-25) और राजस्व आयातित और निर्यात किए गए सामानों पर लगाया जाता है, अर्थात व्यापार लेनदेन पर। करों और राजस्व का भुगतान सरकार का अत्याचारी आरोपण नहीं है, परन्तु सरकार के समर्थन में प्रजा की ओर से आवश्यक और उचित भागीदारी है।

(2) मसीहियों को ज़रूर सरकार के प्रति आदर देना चाहिए।

मसीहियों का कर्तव्य, न केवल सरकारी करों और राजस्व का भुगतान करना है, बल्कि आदर और सम्मान करना भी है। मसीहियों को सभी लोगों का और निश्चित रूप से अधिकारी लोगों का सम्मान करना चाहिए। मसीहियों को सरकार का सम्मान करना चाहिए जब वह अपने कर्तव्यों का पालन अच्छे ढंग से करती है।

परन्तु, न केवल नागरिकों का कर्तव्य है कि वे सरकार का समर्थन, आदर और सम्मान करें, बल्कि सरकार का भी कर्तव्य है कि वह परमेश्वर के नियमों और मानकों के अनुसार अपना कार्य करे। सरकार के पास पूर्ण शक्ति या अधिकार नहीं है, क्योंकि उसने बाइबल के परमेश्वर से अपने कार्य और अधिकार प्राप्त किए हैं! इसलिए सरकारों में सभी शासक और अधिकार के पदों पर सभी लोग पहले से ही अपनी जिम्मेदारियों के उत्तरदायी हैं कि वे उन्हें कैसे निभाते हैं।

अंतिम न्याय के दिन सभी लोगों को परमेश्वर को लेखा देना होगा: सरकारों में शासकों को इस बात का लेखा देना होगा कि उन्होंने अपने अधिकार को कैसे निष्पादित किया और सारी प्रजा को इस बात का लेखा देना होगा कि उन्होंने अपने आप को कैसे अधीन किया था। सभी लोगों को इस बात का विवरण देना होगा कि उन्होंने अपने करों और राजस्व का भुगतान कैसे किया या नहीं किया और कैसे उन्होंने अधिकारियों को सम्मान दिया या नहीं दिया है।

13:6-7

***प्रश्न 3*. रोमियों में "व्यवस्था" शब्द का क्या अर्थ है?**

ध्यान दें।

(1) शब्द "व्यवस्था" के विभिन्न अर्थ।

पौलुस ने व्यवस्था के विषय में बहुत कुछ सिखाया है। यह उल्लेखनीय है कि पौलुस कई अलग-अलग अर्थों के साथ "व्यवस्था" शब्द का उपयोग करता है।

व्यवस्था परमेश्वर के उद्धार और न्याय के लिए पूर्ण धर्मिकता की माँग है। व्यवस्था धार्मिकता और पवित्रता (उद्धार) और न्याय (सर्वनाश) के लिए परमेश्वर की परम माँग और शर्त है। क्योंकि बाइबल का परमेश्वर 100% धर्मी और पवित्र है, वह माँग करता है कि सभी लोग 100% धर्मी और पवित्र जीवन जीएं और वह माँग करता है कि सभी अपराधों का 100% न्याय हो और दंड दिया जाए। यह व्यवस्था परमेश्वर के संबंध में मनुष्य की स्थिति को संबोधित करती है।

परमेश्वर की व्यवस्था दुनिया में और इतिहास में सभी लोगों के लिए प्रकट की गई है (रोमियों 1:19-20; 2:14-5)। लोग जानते हैं कि जो कोई भी परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करता है, वह मरने के योग्य है (रोमियों 1:32)। सभी लोगों के कामों का न्याय इस आधार पर किया जायेगा कि वे परमेश्वर की व्यवस्था के विषय में कितना जानते हैं (रोमियों 2:12)। प्रत्येक मनुष्य उस क्षेत्र में रहता है जिसमें परमेश्वर की व्यवस्था संचालित है और उसके पास प्रासंगिकता है। व्यवस्था सभी लोगों को दोषी मानती है, उनके तर्कों को चुप करवाती है, उन्हें परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी बनाती है और उन्हें धर्मी नहीं ठहरा सकती या उन्हें बचा नहीं सकती (रोमियों 3:19-20)।

दस आज्ञाएँ। परमेश्वर की व्यवस्था शुद्धिकरण (पवित्र जीवन जीने) के लिए परमेश्वर की पूर्ण माँग और शर्त है। शब्द "व्यवस्था" का प्रयोग नैतिक व्यवस्था या दस आज्ञाओं को दर्शाने के लिए भी किया जाता है और इसके निम्नलिखित दो कार्य हैं:

परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था का पहला कार्य मनुष्य के पापी स्वभाव के भीतर पाप को सक्रिय करना है (रोमियों 7:8-9)। मनुष्य के पापी स्वभाव के भीतर नैतिक व्यवस्था के बिना पाप "मृत" या निष्क्रिय होता है। परमेश्वर की व्यवस्था बताती है कि परमेश्वर की दृष्टि में सही और गलत क्या है। जब कोई व्यक्ति सचेत रूप से परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था या दस आज्ञाओं के विषय में सोचता है, तो उसके पापी स्वभाव के भीतर पाप जीवित हो जाता है और वह बहुत सक्रिय हो जाता है। यह आमतौर इस व्यक्ति के जीवन परिवर्तन से कुछ समय पहले, उसके दौरान और उसके बाद होता है।

परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था का दूसरा कार्य धर्मी ठहराए (बचाए गए) व्यक्ति (मसीही) को सिखाना है कि कैसे धार्मिकता में जीना है, अर्थात प्रेम का जीवन कैसे जीना है (रोमियों 13:8-10)।

पुराना नियम। पुराने नियम के लेखों में परमेश्वर की व्यवस्था लिखित रूप में है। परमेश्वर की व्यवस्था पुराने नियम की पुस्तक है, क्योंकि इसमें परमेश्वर का विशिष्ट प्रकाशन, उसके शब्द, उसके कार्य, उसकी इच्छा और उसकी आवश्यकताएँ सम्मिलित हैं। पहले केवल यहूदियों के पास परमेश्वर का यह विशेष प्रकाशन था (रोमियों 2:12)। पुराने नियम ने पहले ही यह प्रकट कर दिया था कि परमेश्वर की धार्मिकता व्यवस्था के कामों से प्राप्त नहीं की जा सकती है, परन्तु केवल विश्वास (मसीहा और उसके उद्धार के पूर्ण कार्य में) के माध्यम से (रोमियों 3:21-22; 4:3-8)। आज, पुराना नियम और नया नियम यहूदियों के साथ-साथ

गैर-यहूदियों के लिए भी दुनिया की लगभग प्रत्येक भाषा में उपलब्ध है।

(2) व्यवस्था का विभाजन।

व्यवस्था को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:

नैतिक व्यवस्था। परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था में उसकी आवश्यकताएँ बताई गई हैं कि लोगों को कैसे जीना चाहिए। उसमें दस आज्ञाएँ और बाइबल के अन्य सभी नैतिक व्यवस्था सम्मिलित हैं। नए नियम की अवधि में भी नैतिक व्यवस्था वैध रहती है।

अनुष्ठानिक व्यवस्था। पुराने नियम की अवधि के दौरान, परमेश्वर के पास आने, उसके साथ संगति करने, उसकी उपासना करने और उसकी सेवा करने के लिए उसकी आवश्यकताओं को परमेश्वर की अनुष्ठानिक (संस्कारी) व्यवस्था में व्यक्त किया गया था। उसमें पवित्र लोगों (याजकों और लेवियों)*;* पवित्र स्थान (मिलाप का तम्बू और मंदिर)*;* पवित्र समय (सब्त के दिन और धार्मिक पर्व)*;* और पवित्र क्रियाएँ (बलिदान, खतना, शुद्ध खाने, पहले-जन्मे, पहले फल, दसवांश, स्वेच्छा भेंटें आदि) से सम्बंधित नियम थे। अनुष्ठानिक व्यवस्था को *पूरा* (मत्ती 5:17), *रद्द* (कुलुस्सियों 2:14) और *निरस्त (समाप्त)* (इफिसियों 2:15) किया गया है। अनुष्ठानिक व्यवस्था को मसीही कलीसिया में पुन:प्रस्तावित नहीं किया जा सकता है!

नागरिक व्यवस्था। पुराने नियम की अवधि के दौरान, धर्मशासित राष्ट्र इस्राएल के लिए परमेश्वर की आवश्यकताओं को सामाजिक (नागरिक) व्यवस्था में व्यक्त किया गया था। इनमें राजाओं, न्यायियों, युद्धों, संपत्ति, दंड, आदि से संबंधित नियम सम्मिलित थे। क्योंकि धर्मशासित राष्ट्र इस्राएल परमेश्वर के राज्य में प्रवेश हुआ है, जिसमें पृथ्वी का प्रत्येक देश सम्मिलित है, इसलिए इस्राएल की नागरिक व्यवस्था अब लागू नहीं होती है और परमेश्वर के राज्य के सिद्धांतों के साथ प्रतिस्थापित हुई है जो मत्ती अध्याय 5-7 और यीशु मसीह के सभी दृष्टांतों में सिखाए गए हैं।

13:8-10

***प्रश्न 4*. अपने पड़ोसी के संबंध में मसीही की क्या जिम्मेदारी है?**

ध्यान दें।

रोमियों 13:8 कहता है, "आपस के प्रेम से छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।" कोई ऋण बकाया नहीं रहने दें, एक दूसरे से प्रेम करने को जारी रखने के ऋण को छोड़कर, क्योंकि जो अपने साथी से प्रेम करता है, उसने व्यवस्था को पूरा किया है। इस पद पर जोर वित्तीय ऋण पर नहीं है, बल्कि प्रत्येक मसीही के दायित्व पर है कि वह अपने पड़ोसी से प्रेम करे। रोमियों 13 सिखाता है कि अपने पड़ोसी से प्रेम करना भी शुद्धिकरण का एक भाग है।

(1) अपने पड़ोसी से प्रेम करना मसीहियों के लिए निरंतर दायित्व है।

प्रेम को एक ऋण के रूप में नहीं माना जाता है जिसका मसीहियों ने अभी तक भुगतान नहीं किया है। प्रेम को एक अपार ऋण के रूप में भी नहीं माना जाता है, एक ऐसा ऋण जिसे कभी भी पूरा नहीं किया जा सकता। पौलुस केवल मसीहियों को स्मरण दिला रहा है कि प्रेम एक स्थायी दायित्व है।

(2) अपने पड़ोसी से प्रेम करना व्यवस्था की पूर्णता है।

"वह जो अपने साथी से प्रेम करता है उसने व्यवस्था को पूरा किया है"। इस पद में, पौलुस परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के अर्थ में "व्यवस्था" शब्द का उपयोग करता है, जिसे दस आज्ञाओं में संक्षेपित किया गया है। इस पद में, पौलुस ने दस आज्ञाओं में से चार को उद्धृत किया है। इसका अर्थ यह है कि दस आज्ञाओं में मसीहियों के लिए स्थायी और टिकाऊ प्रासंगिकता है। यह उदाहरण प्रस्तुत करता है कि वास्तव में प्रेम क्या है। दस आज्ञाएँ मसीहियों को सिखाती हैं कि कैसे वह जीवन जिया जाए जो परमेश्वर को प्रसन्न करे, अर्थात प्रेम का जीवन कैसे जीएं। "व्यवस्था की पूर्ति" का अर्थ है कि प्रेम के बिना कोई भी नियम कभी पूरा नहीं होता है! दस आज्ञाओं को प्रेम के बिना पूरा नहीं किया जा सकता है! यह केवल प्रेम के माध्यम से है कि मसीही परमेश्वर के सभी आदेशों में उसकी माँग को पूरा कर सकते हैं।

(3) अपने पड़ोसी से प्रेम करने का अर्थ है अपने पड़ोसी के प्रति पाप न करना।

अधिकांश दस आज्ञाओं को नकारात्मक रूप में बोला गया है, "न करो!" "व्यभिचार न करो।" "हत्या न करो।" "चोरी न करो।" "लोभ न करो।" परन्तु प्रेम का नियम सकारात्मक रूप में बोला गया है, "अपने पड़ोसी से प्रेम करो।" इस प्रकार, प्रेम करने के नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पहलू हैं: आप तब प्रेम करते हैं जब आप कुछ चीजों को नहीं करते हैं और जब आप कुछ चीजों को करते हैं तो आप प्रेम करते हैं। जबकि पुराने नियम ने उन चीजों पर जोर दिया है जो विश्वासियों को नहीं करनी चाहिए, नया नियम उन चीजों पर जोर देता है जिन्हें विश्वासियों को करना चाहिए!

प्रेम कभी पाप की वास्तविकता को अनदेखा नहीं करता है! एक मसीही जानबूझकर पाप करते हुए प्रेम नहीं कर सकता है। 1 थिस्सलुनीकियों 5:22 कहता है कि सच्चा मसीही प्रेम "हर प्रकार की बुराई से बचता है।" रोमियों 13:10 कहता है, कि सच्चा प्रेम "अपने पड़ोसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता है।" सच्चा प्रेम किसी भी रीती की यौन अनैतिकता में अपने पड़ोसी को सम्मिलित नहीं करेगा। सच्चा प्रेम अपने पड़ोसी के जीवन के किसी भी पहलू को नष्ट नहीं करेगा। सच्चा प्रेम अपने पड़ोसी की कोई चीज़ नहीं चुराएगा। और सच्चा प्रेम यहाँ तक कि अपने पड़ोसी से कुछ लेने की सोचेगा भी नहीं या इच्छा भी नहीं करेगा। इस प्रकार, दस आज्ञाएँ नकारात्मक रूप में हैं, क्योंकि वे पाप की वास्तविकता को कभी अनदेखा नहीं करती हैं। 1 कुरिन्थियों 13:4-6 में भी सच्चा प्रेम नकारात्मक शब्दों में व्यक्त किया गया है: "प्रेम ईर्ष्या नहीं करता है", क्योंकि यह कभी भी पाप की वास्तविकता को अनदेखा नहीं करता है!

]

(4) अपने पड़ोसी से प्रेम करने का अर्थ है अपने पड़ोसी के प्रति सकारात्मक कार्रवाई करना।

"अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम कर" एक अनिवार्यता है और इसे सकारात्मक रूप में कहा गया है। प्रेम न केवल पाप जैसी नकारात्मक चीजों से बचता है, बल्कि निषेध (नकारात्मक) को उसकी विपरीत आज्ञा (सकारात्मक) में भी बदल देता है! उदाहरण के लिए, प्रेम सक्रिय रूप से अपने पड़ोसी को हर प्रकार की यौन अनैतिकता से बचाता है। और प्रेम सक्रिय रूप से अपने पड़ोसी के जीवन के शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, बौद्धिक और आत्मिक कल्याण को बढ़ावा देता है। प्रेम सक्रिय रूप से अपने पड़ोसी की संपत्ति का सम्मान और सुरक्षा करता है। और प्रेम सक्रिय रूप से सराहना करता है और इस बात से प्रसन्न होता है कि उसके पड़ोसी के पास क्या है या वह क्या करता है। प्रेम न केवल अपने पड़ोसी को कोई नुकसान नहीं पहूँचाता है, बल्कि अपने पड़ोसी के लिए सक्रिय रूप से हर प्रकार की अच्छाई करता है।

13:13-14

***प्रश्न 5.* अंधेरे के क्षेत्र और प्रकाश के क्षेत्र के संबंध में मसीही की क्या जिम्मेदारी है?**

ध्यान दें।

(1) मसीहियों का कर्तव्य है कि वे उस समय को जानें, जिसमें वे रहते हैं।

रोमियों 13:11 सचमुच कहता है, "इस *समय* को जानो"। शब्द "समय" (यूनानी: कैरोस) यहाँ *अंत समय की घटनाओं के प्रकाश में वर्तमान समय* को संदर्भित करता है। हम कहते हैं, "यह जानना कि चीज़ों की क्या स्थिति है।" यह वर्तमान समय को देखना है, यह जानते हुए कि यह मसीह के दूसरे आगमन, अंतिम न्याय और पृथ्वी पर सभी चीजों के नवीकरण की दिशा में तेजी से बढ़ना है। और रोमियों 13:12 कहता है, "रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है।" "दिन", जो निकलने पर है, न्याय के दिन का संदर्भ है।

(3) मसीहियों का कर्तव्य है कि वे वह सब कुछ उतार दें जो अंधेरे से जुड़ा है और उसे पहन लें जो कुछ प्रकाश से जुड़ा हुआ है।

बाइबल के अनुसार, "वर्तमान युग, जो मसीह के दूसरे आगमन के युग से पहले है, बुरा है"। इसलिए, मसीहियों को हमेशा वर्तमान युग को आने वाले युग के प्रकाश में देखना चाहिए, और पवित्र जीवन जीना चाहिए। रोमियों 13:12 कहता है, "इसलिये हम अन्धकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बान्ध लें।" यीशु मसीह के दूसरे आगमन में मसीही विश्वास ही वह कारण है कि वे पवित्रता में बढ़ना चाहते हैं। "प्रभु यीशु मसीह को पहन लो" को कहीं और "नए मनुष्यत्व को पहनना" कहा गया है (इफिसियों 4:24)। इस प्रकार, हम मसीहियों को अवश्य "अधर्मी और सांसारिक जुनून को "नहीं" कहना चाहिए, और इस वर्तमान युग में आत्म-नियंत्रित, शुचिता और ईश्वरीय जीवन जीना चाहिए, जबकि हम धन्य आशा की प्रतीक्षा करते हैं, अर्थात्, हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह का प्रकटीकरण" (तीतुस 2:12-13)।

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 13:1-14 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

1. रोमियों 13:1-14 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

13:1. बाइबल में दिए सात अधिकार- समर्पण रिश्तों में से हर किसी के प्रति स्वयं को समर्पित करें।

13:1-2. ऐसी बुरी शक्तियाँ हैं जिन्हें परमेश्वर ने स्थापित नहीं किया है और इसलिए मसीहियों को उनके प्रति समर्पण नहीं करना चाहिए। परमेश्वर उन्हें कुछ लोगों पर अधिकार करने की अनुमति देता है और सहता है जब तक कि वह उन्हें नष्ट नहीं कर देता। उदाहरण के लिए, शैतान का पूरे दुष्ट संसार पर नियंत्रण है, अर्थात वह संसार जो परमेश्वर, मसीह और उसके लोगों से घृणा करता है और उनका विरोध करता है (1यूहन्ना 5:19; यूहन्ना 12:31; 17:14-16)। अन्य उदाहरण दो पशु हैं। "समुद्र से निकला पशु" जो शैतान की मसीहविरोधी सरकारों को प्रदर्शित करता है, "पृथ्वी से निकला पशु" जो शैतान के मसीहविरोधी धर्मों और दर्शन को प्रदर्शित करता है और "बड़ी वेश्या, बाबुल", जो शैतान की मसीहविरोधी नैतिकता को प्रदर्शित करता है (प्रकाशितवाक्य अध्याय 17 और 19:19-

20)।

13:3. अधिकारीयों से न भयभीत न हों। यदि आप भय से मुक्त होना चाहते हैं, तो वही करें जो परमेश्वर और अन्य छह अधिकार की संस्थाओं की दृष्टि से सही है।

13:4. कुछ परिस्थितियों में एक सरकार को "तलवार" काम में लाने का अधिकार है, अर्थात मृत्युदंड को लागू करना (उत्पत्ति 9:6; निर्गमन 21:12; गिनती 35:16, 30-31; व्यवस्थाविवरण 19:11-13; न्यायियों 9:24; 2 राजा 14:5-6; मत्ती 26:52) या युद्ध में अपने देश की रक्षा करना। फिर भी, तलवार को काम में लाने का कारण कभी भी मनमाना नहीं हो सकता है और उसे कभी भी परमेश्वर के वचन का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

13:6-7. सरकार को अपने करों और राजस्व का भुगतान करें। सरकारी पदों पर और अधिकार के किसी अन्य पद पर लोगों का आदर और सम्मान करें।

13:8. अपने जीवन की हर परिस्थिति में आप अपने पड़ोसी से प्रेम करने के दायित्व के तहत खड़े होते हैं, अर्थात, उस व्यक्ति से प्रेम करने के लिए जिसे परमेश्वर आपके मार्ग में लाता है (लूका 10:25-37)।

13:9. हमेशा अपने पड़ोसी को हर प्रकार की यौन अनैतिकता से बचाएं। और उसके शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक, बौद्धिक और आत्मिक कल्याण को बढ़ावा दें।

13:9. हमेशा अपने पड़ोसी की संपत्ति की रक्षा करें। और सक्रिय रूप से उसकी संपत्ति और उपलब्धियों की सराहना करें।

13:10. अपने पड़ोसी को कभी नुकसान न पहूँचाएं। हमेशा उसके साथ अच्छी और दयालु बातें करें।

13:11. प्रतिदिन सतर्क रहें, क्योंकि मसीह का दूसरा आगमन तेजी से निकट आ रहा है।

13:12-13. व्यभिचार और पियाकड़पन, यौन अनैतिकता और ऐयाशी, मतभेद और ईर्ष्या को बंद करें।

13:14. अपने आप को मसीह के साथ और धार्मिकता और पवित्रता के साथ ढाँप लें जो उसने आपके लिए अर्जित किए हैं। कभी भी पुराने पापी स्वभाव की किसी भी इच्छा को पूरा करने की न सोचें।

2. रोमियों 13:1-14 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

एक मसीही के रूप में, मैं हर उस चीज़ में स्वयं को शासी अधिकारियों के प्रति समर्पित करना चाहता हूँ जो बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं के विरुद्ध नहीं है। इसका अर्थ यह भी है कि मैं करों का भुगतान करने और सरकारी नेताओं का सम्मान करने के लिए प्रतिबद्ध हूँ।

दस आज्ञाएँ मेरे लिए यह जानना के लिए बहुत ज़रूरी हैं कि कैसे परमेश्वर चाहता है कि मैं अपने पड़ोसी से व्यावहारिक रूप से प्रेम करूँ। मैं न केवल अपने पड़ोसी के विरुद्ध पाप करने से बचना चाहता हूँ, बल्कि वह भी सक्रिय रूप से करना चाहता हूँ जो मेरे पड़ोसी के लिए सबसे अच्छा है। मैं यह स्मरण रखना चाहता हूँ कि प्रेम का अर्थ मेरे पड़ोसी के विरुद्ध कभी भी पाप न करना है और हमेशा सक्रिय रूप से वह करना है जो मेरे पड़ोसी के लिए अच्छा है।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 13:1-14 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[मध्यस्थता]* **दूसरों के लिये प्रार्थना**

दो या तीन समूहों में प्रार्थना करना जारी रखें। एक दूसरे के लिये और संसार भर के लोगों के लिये प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	*[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिये**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 12:1-21में से प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यहेजकेल 2, 18, 33 और 34** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ
4. स्मरण करना। **(16) रोमियों 12:16.** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 25:14-30. में पाए जाने वाले "**तोड़े**" **के दृष्टान्त** की तैयारी करें। दृष्टान्तों की व्याख्या करने के लिये उन छः निर्देशों का उपयोग करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3
7. परमेश्वर के राज्य के विषय पर प्रचार करने हेतु अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। अपने शांत समय के नोट्स, अपने स्मरणीय नोट्स, अपने बाइबल के अध्ययन के नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।